IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, June 2019
Impact Factor: 4.819

आधुनिक परिवारों मे वृद्ध

डॉ. चंदन कुमार पांडेय

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

राजकीय महाविद्यालय, मौदहा, हमीरपुर

पश्चिमी समाज के परिवारों में हो रहे विघटन ने उन्हें यह सोचने पर बाध्य कर दिया है कि क्या परिवार एक समाप्त हो रही (मृतप्राय) संस्था है। यद्यपि भारतीय परिवारों के संरचनात्मक आदर्श पश्चिमी परिवारों से भिन्न हैं, तथापि यह भी सत्य है कि परम्परागत भारतीय परिवार के संरचना और संगठन पर विभिन्न प्रक्रियाओं और कारकों का गहन प्रभाव पड़ा है। यह कहना गलत नहीं है कि "उदारीकरण के परिणामस्वरूप हो रहे वैश्वीकरण के इस युग में परिवार की संस्था में हो रहे परिवर्तन की समाज वैज्ञानिक विवेचना हेतु गहन अध्ययन की आवश्यकता है।"

वास्तव में वर्तमान समय में भारतीय परिवार संक्रमणशील अवस्था में है। जहाँ एक ओर भारत में औद्योगीकरण, नगरीकरण, आधुनिकीकरण, नवीन कानून व्यवस्था, महिलाओं में आई जागरूकता इत्यादि से विकास चक्र को गति मिल रही है, वहीं दूसरी ओर भारतीय संयुक्त परिवारों में परिवर्तन प्रारम्भ हो गया है। वे संयुक्त से एकाकी हो रहे हैं, उनमें लड़ाई-झगड़े में वृद्धि हो गई है, लोगों में व्यक्तिवादिता और अहमवादिता आ गई है जिसका सर्वाधिक खामियाजा हमारे वृद्धों को भुगतना पड़ता है क्योंकि पारिवारिक विघटन से उनकी परम्परागत देखभाल की व्यवस्था प्रभावित हो रही है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in